P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-4* July- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

महाभारत में राजधर्म

सारांश

महाभारत भारत का एक विशाल महाकाव्य है जिस में सम्पूर्ण प्राचीन भारत का ज्ञान निहित है। इसमें प्रशासनिक संगठन व राजनीति के सन्दर्भ में कई प्रकार के विचार मिलते है। इसमें राजधर्म का उल्लेख भी मिलता है। राजधर्म में प्रजा के प्रति राजा के कर्तव्य व कार्यो सम्बन्धी जानकारी मिलती है। राजधर्म की सबसे विस्तृत जानकारी महाभारत के शान्तिपर्व से प्राप्त होती है। जिसमें भीष्म पितामह युधिष्ठिर को राजधर्म के सन्दर्भ में उपदेश देते हुये उससे अवगत करवाते हैं।

राजधर्म की विषय वस्तु में राजा, राजा के गुण, राजा के कार्य, कर्तव्य, अधिकार, दण्डनीति, राज्य के अंग, प्रशासनिक विभाग, न्याय व विधि व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था, सैनिक व्यवस्था, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध इत्यादि विषयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

राजधर्म में राजा द्वारा स्वधर्म का पालन करने व प्रजा को भी स्वधर्म का पालन करने के लिये प्रेरित करने व उसका पालन करवाने के सन्दर्भ में राजा के दायित्व का उल्लेख मिलता है। मुख्य रूप से महाभारत में राजधर्म के अन्तर्गत राजनीति विषय के प्रमुख पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द : राजधर्म, पाखण्डी, क्षात्र धर्म, स्त्रोत, धर्म संकर, नीति शास्त्र

नीलम जुनेजा
व्याख्याता,
इतिहास विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
सूरतगढ़, श्रीगंगानगर (राज0)

प्रस्तावना

राज धर्म का स्वरूप अत्यन्त व्यापक एवं गूढ़ है। प्राचीन काल में इसे दण्डनीति[1], राजधर्म [2], अर्थशास्त्र [3], नीति शास्त्र [4] अथवा राजनीति शास्त्र इत्यादि नामों से अभिहित किया गया है। वस्तुतः प्राचीन काल में धर्म को कर्तव्य के रूप में अंगीकर किया गया है। इसलिये वर्णाश्रम धर्म, राजधर्म, नारी धर्म आदि का उल्लेख होता है। कर्तव्य में प्रवृति और अकर्तव्य में निवृति हेतु सर्वाधिक सशक्त साधन के रूप में प्राचीन धार्मिक साहित्यों में धर्म को स्थान दिया गया है।

उद्देश्य

महाभारत में राजधर्म इस शोध पत्र का उद्देश्य महाभारत काल के राजधर्म के अर्थ, विषयवस्तु, व्यापकता व उसके महत्व को साबित करना है।

राजधर्म का स्वरूप एवं व्याख्या

राजधर्म पर प्राचीन भारत में बहुत से साहित्य उपलब्ध है महाभारत, धर्म शास्त्र और मनु स्मृति में इसका विशेष उल्लेख है। राजधर्म का अर्थ राजा के कर्तव्य एव कार्यो से है, राजधर्म का व्यापक अर्थ यह है कि इसके पालन से समाज मे भी व्यवस्था बनी रहती है क्योंकि राजा राज्य का सर्वोपरि अधिकारी है, प्रजा उसके अधीन है, लोगों के लिये नियमो का निर्माण राजा करता है उसका पालन करवाना राजा का दायित्व है। राजधर्म के भय से लोगों में उसके पालन के प्रति कर्तव्य भावना बनी रहती है।

राजधर्म का स्वधर्म पालन से भी गहरा सम्बन्ध है। कौटिल्य के मतानुसार स्वधर्म का पालन स्वर्ग व मोक्ष के लिये होता है। यदि स्वधर्म का उल्लंघन किया जाये तो अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। अतः राजा का कर्तव्य है कि मनुष्य को स्वधर्म का उल्लंघन ना करने दे। महाभारत मे उल्लेख है राजा को चाहिये व चारो वर्णो की रक्षा करे। (दूसरे के धर्म संकर का अनुसरण) अर्थात रक्षा करना राजा का कर्तव्य है। यह राजा का सनातन धर्म है।[5] राजा केवल अपनी प्रजा से नही बल्कि स्वयं भी स्वधर्म (राजधर्म) का पालन करता था। इसका पालन करना इसलिये आवश्यक था कि यदि वह स्वयं धर्म का पालन नहीं करेगा तो प्रजा भी अपने– अपने कर्तव्यों से उदासीन हो जायेगी। महाभारत में इसका अत्यन्त विस्तार से वर्णन है।

राजधर्म की विषय वस्तु

राज्य का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। इसमें राज्य की उत्पति, राज्य के अंग, राजा का स्वयं का आचरण, राज्य के अन्तरंग विभागों के प्रति उस के कर्तव्य, लोकहित सम्बन्धी करने वाले कार्य, आचार–व्यवहार, प्रजा जनों का

सर्वागीण विकास हेतु सजगता, निष्पक्ष न्याय, आर्थिक विकास, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, प्रजा के जान–माल की सुरक्षा, राज्य की प्रगति व सुशासन इत्यादि राजधर्म की सीमा में आता है। राजा की निजी दिनचर्या, और व्यवहार में राजा के द्वारा किये जाने वाले कार्य को भी धर्म से नियन्त्रित कर राजधर्म में सम्मिलित किया गया है।

महाभारत एवं शान्ति पर्व में राजधर्म विषयक विचार

युधिष्ठिर द्वारा भीष्म पितामह से राजधर्म के विषय पर पूछे जाने पर राजधर्म क्या है? भीष्म उत्तर देते हैं राजा के धर्म में धर्म, अर्थ, काम तीनो का समावेश है और सम्पूर्ण मोक्ष धर्म भी राजधर्म में निहित है।[6] अर्थात राजधर्म श्रेष्ठ है। शान्ति पर्व में राजधर्म में प्रजा को प्रसन्न रखना राजा के लिये अनिवार्य है इस पर भी विचार मिलते है। जैसे शान्ति पर्व में राजा को सबसे पहले प्रजा का रंजन अर्थात उन्हें प्रसन्न रखने की इच्छा से देवताओं ओर ब्रह्माणों का पूजन व आदर सत्कार करना चाहिये। इससे राजा धर्म के ऋण से मुक्त हो जाता है और सारा जगत उसका आदर सत्कार करता है।[7] जो राजा स्वधर्म पालन व प्रजा का हित करता है वह इहलोक व परलोक मे प्रशंसा को प्राप्त करता है।

राज धर्म का इनका महत्व है मनु के अनुसार इसका पालन ना करने पर दण्ड का प्रकोप होता है और अन्ततोगत्वा राजा मृत्यु को प्राप्त होता है।

महाभारत के अनुसार राजधर्म विश्व का सबसे बड़ा धर्म है उस में सभी धर्मो के नियम समाहित है। महाभारत में राजा को युग निर्माता कहा गया है। शान्ति पर्व में उल्लेख है सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग सभी राजा के आचरण मे स्थित है। राजा ही युग का प्रवर्तक होने के कारण युग कहलाता है।[8]

धर्म का दबाव राजा पर इतना रखा गया है कि उससे नियन्त्रित होने पर वह कभी भी कर्तव्य विमुख नहीं हो सकता। इस कारण राज व्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ सकता। महाभारत में युधिष्ठिर ने कहा है जब राजा अपने धर्म से च्युत हो जाता है तो समाज में अव्यवस्था छा जाती है, सर्वत्र कोलाहल छा जाता है क्योंकि राजा व प्रजा आबद्व है। युधिष्ठिर ने यह भी कहा है जैसे सूर्य अंधकार को विदीर्ण कर प्रकाशवान बनाता है उसी प्रकार राजा राजधर्म का उचित प्रयोग कर प्रजा के हृदय को अलोकित करता है एवम सभी बुराईयों को नष्ट कर देता है।[9]

महाभारत में क्षत्रिय धर्म/राजधर्म को सभी धर्मो से श्रेष्ठ बताया गया है क्योंकि दुष्टो के अन्त के लिये राजा दण्ड का प्रयोग करता है ना करे तो समाज में अराजकता छा जायेगी, और मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकेगा। शान्ति पर्व में दण्ड नीति की परिभाषा में कहा गया है विश्व दण्ड के आधार पर अच्छे मार्ग पर लाया जाता है जो शास्त्र दण्ड देने की व्यवस्था करते है उसे दण्ड नीति कहते है। दण्ड नीति को राजधर्म से संयुक्त कर दिया गया है। शान्ति पर्व में दण्ड नीति को क्षत्रिय राजा का विशिष्ट व्यापार कहा है और बताया गया है दण्ड नीति सम्पूर्ण विश्व का आश्रय है यह देवी सरस्वती द्वारा उत्पन्न की गई है। शान्ति पर्व में क्षात्र धर्म के बारे में कहा गया है संसार के सभी धर्म शास्त्र धर्म पर अवलम्बित है यदि क्षात्र धर्म प्रतिष्ठित ना हो वो जगत के सभी जीव अपनी मनोवांछित वस्तु पाने में निराश हो जाये।[10]

भीष्म ने राजधर्म की सर्वोच्चता को स्वीकार किया है और कहा है। ''राजा जब अपने कर्तव्य का पालन करता है तो उसे उन सन्यासियों से भी सौ गुणा फल मिलता है जो जंगलों में रहते है। युधिष्ठिर को आश्वस्त करते हुये कहा गया है 'राजधर्म की पालना व अनुपालना जिसमें प्रजा की रक्षा सर्वोपरि है इसका पालन करने से राजा यह लोक व परलोक दोनों सुधार लेता है। राजधर्म की अनुपालना पर अपने प्राणो की आहुति दे देना सर्वोच्च क्षात्र धर्म है। यू.एन. घोषाल 'राजनीति (राजधर्म) वस्तुतः मौलिक, सामाजिक और राजनीतिक सिद्धान्त है जो मानव के उद्देश्य पूर्ति और शाश्वत सुरक्षा प्रदान करता है।''[11]

भीष्म ने दण्डनीति व राजधर्म दोनों को आवश्यक बताया है कहते है यदि दण्ड नीति नष्ट हो जाती है तो तीनो वेद लुप्त हो जायेगे, कर्तव्यों की दुनिया में कोलाहल मच जायेगा। राजा के आततायी (अत्याचारी) होने पर असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। केवल दण्डनीति के प्रयोग से पुण्यात्माए दुष्टात्माओं को वश में कर सकेगी, और धर्म का क्षय नहीं होगा।

समाज में सुख, समृद्धि, शान्ति और प्रसन्नता केवल दण्डनीति के समुचित प्रयोग से सम्भव है। दण्डनीति से राजा अप्राप्त वस्तु को प्राप्त कर सकता है, प्राप्त की गई वस्तु को सुरक्षित रख सकता है। इसलिये दण्ड नीति को राज विद्या एवम जीवन के विभिन्न पक्षो के विकास का साधन बताया है।

कौटिल्य ने भी दण्डनीति के चार आधार बताये है –

1 जो वस्तु प्राप्त नहीं होती उसे प्राप्त करना।
2 जो प्राप्त हो चुकी है, उसकी रक्षा करना
3 जो वस्तु रक्षित है उसकी वृद्धि करना
4 जो प्राप्त हो चुकी है उसे उचित कार्य में लगाना[12]

अर्थात दण्डकारी शासक का कर्तव्य है राष्ट्र एवम प्रजाहित के आवश्यक स्त्रोत को खोजे।

मनु ने भी दण्डनीति के चारो आधारो का उल्लेख किया है। वे पुरूषार्थ का उपार्जन यही मानते है।

कामन्दक ने राज के चार प्रकार के कार्य बताये है न्यायपूर्वक अर्थ का अर्जन, उस का रक्षण, वर्द्धन, तथा सत्पात्रो में उसका वितरण।[13] पी.वी. काणे 'शान्ति पर्व के उद्वाहरणों के आधार पर राजधर्म को सभी धर्मो का सार मानते है।[14]

व्यास जी भी महाभारत में वर्णित राजधर्म के सन्दर्भ में कहा है 'राज धर्म अन्य धर्मो का मूल है। राजधर्म में सभी धर्म समाहित है। जब की अन्य धर्म साधारण शान्ति और सुविधा ला पाते है, क्षात्र धर्म सम्पूर्ण समाज और प्राणियों को व्यापक शान्ति और सुख प्रदान करता है। जैसे हाथी के पांवो में सबके पांव आ जाते है जैसे क्षात्र धर्म (राजधर्म) में सभी धर्म समा जाते है। पूजा–पाठ, यज्ञ–हवन, जप–तप चिन्तन–मनन तब ही संभव है जबकि राजधर्म प्रज्जवलित रहता हे। वर्णात्मक

धर्म भी तभी सुरक्षित रह जाता है अर्थात राजधर्म सबसे सर्वोच्च है।[15]

राजधर्म की जानकारी के स्त्रोत

राजधर्म के स्त्रोतों में कई प्रकार के धार्मिक व संस्कृत साहित्यों का उल्लेख मिलता है जिस राजधर्म का विवेचन हुआ है जैसे धर्मग्रन्थ, पुराण, रामायण, मनुस्मृति, कामन्दक नीतिसार, शुकनीतिसार, कौटिल्य अर्थशास्त्र, जैन एवम बौद्ध ग्रन्थ महाभारत इत्यादि। महाभारत में वन पर्व, सभापर्व, उद्योग पर्व, आश्रम वासिक पर्व व शान्ति पर्व है। सबसे विस्तार से वर्णन शान्ति पर्व में मिलता है। इसलिये शन्ति पर्व को राजधर्म पर्व के नाम से भी पुकारा जाता है। शान्ति पर्व में अध्याय 56 से 130 में अत्यन्त विस्तार से और अध्याय 131–172 में संक्षिप्त रूप में राजधर्म को प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त और भी कई राजनैतिक विचारको का उल्लेख मिलता है जिन्होंने राजधर्म का वर्णन किया है।

इससे स्पष्ट होता है कि प्राचीनकाल में भारत में राजनीतिक चिन्तन की धारा प्रवाहमान रही। जो राजधर्म विषय की व्यापकता का बोध करवाने के लिये पर्याप्त है।

राजधर्म की महत्ता

जहां तक राजधर्म की महत्ता का प्रश्न है वह अपने आप में निर्विवाद है। क्योंकि राजा ही सम्पूर्ण समाज व राज्य का नेता था। वही लोगो में कर्तव्य पालन की व्यवस्था व लोगो के हित संरक्षण के लिये उत्तरदायी था। यदि स्वयं ही कर्तव्य विमुख हो जाये तो निश्चित ही इसका प्रभाव राज्य व समाज पर पड़ता है। राजधर्म में लोक जीवन, भौतिक उत्थान, धार्मिक उत्थान, राज्य में शान्ति व्यवस्था, समृद्धि एवं राज्य विस्तार सभी राजा पर आश्रित था इसलिये राजधर्म का महत्व अत्याधिक जाना जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में महाभारत में वर्णित राजधर्म अत्यन्त स्पष्ट एवम सारगर्भित है। जिसमें राजनीति विषय से सम्बन्धी सिद्धान्तो का विवेचन है। इससे स्पष्ट होता है कि महाभारत काल में राजधर्म विषयक चिन्तन में अत्यन्त सूक्ष्मता, विविधता एवम गम्भीरता थी। ऐसे विचारो की आज भी राजनीति में अत्यन्त आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1 *महाभारत के शान्ति पर्व– 15/29, 59/79, 63/28, 69/74, 122/25*
कौटिल्य अर्थ शास्त्र 1/4/1/4–7, कामन्दीय नीतिसार 2/15
2 *महाभारत शान्ति पर्व – 63/25–26, 29, 56/3, मनुस्मृति अध्याय 7*
3 *महाभारत शान्तिपर्व 71/14, 302/109*
4 *महाभारत शान्ति पर्व – 59/74*
5 *महाभारत शान्ति पर्व – 57/15*
6 *महाभारत शान्ति पर्व – 56/4*
7 *महाभारत शान्ति पर्व – 56/12–13*
8 *महाभारत शान्ति पर्व – 91/6*
9 *महाभारत शान्ति पर्व – 56/7*
10 *महाभारत शान्ति पर्व – 64/2*
11 *यू.एन. घोषाल हिस्ट्री ऑफ इण्डियन पोलटिकल आईडियाज*
12 *कौटिल्य अर्थशास्त्र – 1/4/4–6*
13 *कामन्दकीय नीतिसार– 1/19*
14 *धर्म शास्त्र का इतिहास – पी.वी. काणे भाग 2 पेज 580*
15 *महाभारत शान्ति पर्व – 63/25–26, 29*
16 *प्रो. के.एल. कमल – भारतीय राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर (1998) पृष्ठ 36,38, 49, 50*
17 *डॉ. जी.पी. नेमा, डॉ. हरिशचन्द्र शर्मा – प्राचीन भारतीय सामाजिक एवं राजनैतिक विचार एवं संस्थाएँ कॉलेज बुक डिपो जयपुर (2015) पृष्ठ 18, 19, 27*
18 *कौशल–किशोर मिश्र–कामन्दकीय नीतिसार में राजव्यवस्था व सुशासन– राहुल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ पृष्ठ 1–4, (2012)*
19 *कौशाल किशोर मिश्र–मनु स्मृति मे राज्य व सुशासन– राहुल प. हाउस, मेरठ (2012) पृष्ठ 1–6*
20 *पी.वी. काणे – धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग 2 उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ (1992) पृष्ठ 580–81*
21 *अनुवादक साहित्याचार्य पण्डित राम नारायण दत्त शास्त्री पाण्डेय, महाभारत (पंचम खण्ड) शान्ति पर्व गीता प्रेस गोरखपुर*